ॐ बृं बृहस्पतये नमः ✦ ॐ बृं बृहस्पतये नमः ✦ ॐ बृं बृहस्पतये नमः ✦ ॐ बृं बृहस्पतये नमः ✦ ॐ बृं बृहस्पतये नमः ✦ ॐ बृं बृहस्पतये नमः



हिन्दी में

॥ ॐ बृं बृहस्पतये नमः ॥

श्री बृहस्पतिवार व्रत कथा

पूजा विधि, सामग्री और आरती सहित

Brihaspati Puja
VRAT • KATHA • AARTI
brihaspatipuja.com

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

श्री बृहस्पति देव की संपूर्ण व्रत कथा

BRIHASPATIVAR VRAT KATHA

गुरुवार के दिन पीले वस्त्र पहनकर, केले के वृक्ष और भगवान विष्णु का पूजन करके यह कथा पढ़ें या सुनें, फिर आरती करें।

विषय-सूची CONTENTS

01	व्रत परिचय एवं नियम	महत्व, मंत्र, अवधि	3
02	पूजा सामग्री	आवश्यक वस्तुएँ	4
03	पूजा विधि	क्रमबद्ध पूजन, व्रत का भोजन	4
04	बृहस्पतिवार व्रत कथा	छह भागों में संपूर्ण कथा	6
	भाग एक: रानी का अहंकार और धन का नाश		6
	भाग दो: रानी और दासी का बृहस्पतिवार व्रत		8
	भाग तीन: लकड़हारा बने राजा पर कृपा		10
	भाग चार: ब्राह्मण की कन्या की कथा		11
	भाग पाँच: व्रत भूलने का फल और राजा की वापसी		13
	भाग छह: कथा की महिमा		15
05	श्री बृहस्पति देव की आरती	ॐ जय बृहस्पति देवा	17
06	श्री जगदीश जी की आरती	ॐ जय जगदीश हरे	18
07	आरती विधि एवं अर्थ	कब और कैसे करें	19
08	समापन प्रार्थना	क्षमा प्रार्थना, जयकारा	20

Brihaspati Puja

प्रारम्भ

बृहस्पतिवार व्रत: परिचय एवं नियम

व्रत का महत्व, मंत्र और अवधि

बृहस्पति व्रत बृहस्पतिवार (गुरुवार) के दिन रखा जाता है। यह व्रत बृहस्पति ग्रह के देवता, बृहस्पति देव को समर्पित है। इस दिन श्रद्धालु आदर्श रूप से पीले रंग के कपड़े पहनते हैं और पूजा के दौरान पीले चंदन का इस्तेमाल करते हैं। इस व्रत के दौरान भोजन दिन में केवल एक बार किया जाता है। भोजन में पीली दालें, जैसे बिना छिलके की मूंग दाल या बिना छिलके की पीली चना दाल, शामिल होती हैं। पीला रंग बृहस्पतिवार को समर्पित है।

बृहस्पति व्रत और पूजा गुरुवार के दिन की जाती है, जिसे बृहस्पतिवार भी कहा जाता है। पूजा में उपयोग किए जाने वाले यंत्र को बृहस्पति यंत्र कहा जाता है। घर पर बृहस्पति देव की पूजा करने से पहले मंदिर में बृहस्पति पूजा और यंत्र का अनुष्ठान किया जाना चाहिए। पूजा करने के लिए एक शांत और सुकून भरे स्थान की आवश्यकता होती है। भगवान बृहस्पति की पूजा करते समय पूर्व दिशा की ओर मुख करें (ईशान कोण, यानी उत्तर-पूर्व दिशा, भी शुभ मानी जाती है)। यंत्र को देवता के पास तांबे की थाली पर रखना चाहिए।

> "ॐ ह्रीं क्लीं हूं बृहस्पतये नमः" दिव्य और पवित्र मंत्र है, जिसका जाप बृहस्पति पूजा के दौरान किया जाता है। व्यक्ति को प्रतिदिन 108 बार मंत्र का जाप करना चाहिए और कुछ समय में कुल 19000 जाप पूरे करने चाहिए। मंत्र का जाप करते समय एक थाली में सूखी मिठाई रखनी चाहिए और आंखें बंद करके प्रार्थना करनी चाहिए। प्रार्थना करते समय अपनी मनोकामना के अलावा कुछ भी नहीं सोचना चाहिए।

यह व्रत आमतौर पर 16 गुरुवार तक रखा जाता है; कुछ भक्त उद्यापन से पहले इसे 5, 7, 11 या 21 गुरुवार तक, या जितने समय तक चाहें, रखते हैं।

ॐ बृं बृहस्पतये नमः ✦ ॐ बृं बृहस्पतये नमः ✦ ॐ बृं बृहस्पतये नमः ✦ ॐ बृं बृहस्पतये नमः ✦ ॐ बृं बृहस्पतये नमः ✦ ॐ बृं बृहस्पतये नमः

पूजा की तैयारी

पूजा सामग्री एवं विधि

गुरुवार की पूजा के लिए आवश्यक वस्तुएँ और पूजन क्रम

बृहस्पति व्रत विधान के लिए आवश्यक पूजा सामग्री: बृहस्पति यंत्र, पीले फूल, तांबे की थाली, जल, पत्तियां, फल, सूखी मिठाई, अगरबत्ती, चंदन का लेप और एक चटाई।

ऊपर बताई गई सामग्री के साथ ज़्यादातर घरों में ये चीज़ें भी तैयार रखी जाती हैं:

- भगवान विष्णु या बृहस्पति देव का चित्र या मूर्ति, और उसे रखने के लिए पीला कपड़ा
- हल्दी, पीला चंदन और हल्दी से रंगे अक्षत (चावल)
- पीले फूल और माला
- भोग के लिए चने की दाल, गुड़ और मुनक्का
- बेसन के लड्डू या कोई और पीली मिठाई
- आरती के लिए घी का दीपक, अगरबत्ती और कपूर
- जल से भरा लोटा, जिसमें थोड़ी हल्दी मिली हो
- बृहस्पतिवार व्रत कथा की पुस्तक

॥ क्रमबद्ध पूजा विधि ॥

1. सूर्योदय से पहले उठें, स्नान करें और साफ़ पीले वस्त्र पहनें।
2. पूजा स्थान साफ़ करें, पीला कपड़ा बिछाएँ और उस पर भगवान का चित्र या मूर्ति रखें।
3. हाथ में जल, अक्षत और फूल लेकर अपना नाम बोलें और गुरुवार व्रत रखने का संकल्प लें।
4. भगवान को जल, हल्दी, चंदन, पीले अक्षत, पीले फूल, चने की दाल और गुड़ अर्पित करें।
5. यदि पास में केले का पेड़ हो, तो उसकी जड़ में हल्दी मिला जल चढ़ाएँ और वहाँ दीपक जलाएँ।
6. घी का दीपक और अगरबत्ती जलाकर बृहस्पति देव के मंत्र का जाप करें।
7. परिवार के साथ बृहस्पतिवार व्रत कथा पढ़ें या सुनें।
8. “ओम जय बृहस्पति देवा” आरती करें, भोग लगाएँ और प्रसाद बाँटें।

Brihaspati Puja

॥ व्रत में क्या खाएँ ॥

जैसा ऊपर बताया गया है, इस दिन भोजन केवल एक बार किया जाता है। बहुत से भक्त यह एक समय का भोजन सादा और पीला रखते हैं, जैसे चने की दाल, बेसन से बने व्यंजन, पीली मूंग दाल की खिचड़ी या गुड़ से बनी मिठाई। बहुत से भक्त व्रत में नमक नहीं खाते; कुछ इसकी जगह सेंधा नमक लेते हैं। भगवान विष्णु को केले का भोग लगाया जाता है और केले के पेड़ की पूजा की जाती है, इसलिए परंपरा के अनुसार बहुत से व्रती गुरुवार को केला नहीं खाते; भोग में चढ़ाए गए केले प्रसाद के रूप में बाँट दिए जाते हैं। जो पूरा उपवास नहीं रख सकते, वे परिवार की परंपरा के अनुसार फल और दूध ले सकते हैं।

॥ व्रत कब शुरू करें और प्रचलित मंत्र ॥

परंपरा के अनुसार यह व्रत शुक्ल पक्ष, यानी चंद्र मास के उजाले वाले पखवाड़े, के पहले गुरुवार से शुरू किया जाता है। शुरुआत में ही तय कर लें कि कितने गुरुवार व्रत रखना है, उन्हें नियम से रखें और अंत में उद्यापन करें। पूजा में जपे जाने वाले अन्य प्रसिद्ध मंत्र हैं:

- “ॐ बृं बृहस्पतये नमः”
- “ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः”
- “ॐ नमो भगवते वासुदेवाय”, भगवान विष्णु के लिए

Brihaspati Puja

ॐ बृं बृहस्पतये नमः ✦ ॐ बृं बृहस्पतये नमः ✦ ॐ बृं बृहस्पतये नमः ✦ ॐ बृं बृहस्पतये नमः ✦ ॐ बृं बृहस्पतये नमः ✦ ॐ बृं बृहस्पतये नमः

कथा: भाग एक

रानी का अहंकार और धन का नाश

बृहस्पतिवार व्रत कथा

प्राचीन समय की बात है। भारत में एक राजा राज्य करता था। वह बड़ा प्रतापी तथा दानी था। वह नित्यप्रति मन्दिर में भगवद्दर्शन करने जाता था। वह ब्राह्मण और गुरु की सेवा किया करता था। उसके द्वार से कोई भी याचक निराश होकर नहीं लौटता था। वह प्रत्येक गुरुवार को व्रत रखता एवं पूजन करता था और हर दिन गरीबों की सहायता करता था। परन्तु यह सब बातें उसकी रानी को अच्छी नहीं लगती थीं। वह न व्रत करती और न किसी को एक भी पैसा दान में देती थी। वह राजा से भी ऐसा करने को मना किया करती थी।

एक समय की बात है कि राजा शिकार खेलने वन को चले गए। घर पर रानी और दासी थीं। उस समय भगवान बृहस्पति देव साधु का रूप धारण कर राजा के दरवाजे पर भिक्षा माँगने आए। साधु ने रानी से भिक्षा माँगी तो वह कहने लगी, “हे साधु महाराज! मैं इस दान और पुण्य से तंग आ गई हूँ। इस कार्य के लिए तो मेरे पतिदेव ही बहुत हैं। अब आप ऐसी कृपा करें कि सारा धन नष्ट हो जाए तथा मैं आराम से रह सकूँ।”

साधु रूपी बृहस्पतिदेव ने कहा, “हे देवी! तुम बड़ी विचित्र हो। सन्तान और धन से कोई दुखी नहीं होता है, इनको तो सभी चाहते हैं। पापी भी पुत्र और धन की इच्छा करता है। अगर तुम्हारे पास धन अधिक है तो भूखे मनुष्यों को भोजन कराओ, प्याऊ लगवाओ, ब्राह्मणों को दान दो, धर्मशालाएँ बनवाओ, कुआँ-तालाब, बावड़ी-बाग-बगीचे आदि का निर्माण कराओ तथा निर्धनों की कुँवारी कन्याओं का विवाह कराओ, साथ ही यज्ञादि करो। इस प्रकार के कर्मों से तुम्हारे कुल का और तुम्हारा नाम परलोक में भी सार्थक होगा एवं तुम्हें भी स्वर्ग की प्राप्ति होगी।” परन्तु रानी साधु की इन बातों से खुश नहीं हुई।

उसने कहा, “हे साधु महाराज! मुझे ऐसे धन की आवश्यकता नहीं, जिसको मैं अन्य लोगों को दान देती फिरूँ तथा जिसको रखने और सँभालने में ही मेरा सारा समय नष्ट हो जाए।”

साधु ने कहा, “हे देवी! यदि तुम्हारी ऐसी ही इच्छा है तो जैसा मैं तुम्हें बताता हूँ, तुम वैसा ही करना। बृहस्पतिवार के दिन घर-आँगन को गोबर से लीपना, अपने केशों को पीली मिट्टी से धोना, केशों को धोते समय स्नान करना, राजा से कहना कि वह हजामत करवाए, भोजन में मांस-मदिरा खाना और कपड़े धोबी के यहाँ धुलने देना। इस प्रकार सात बृहस्पतिवार करने से तुम्हारा सारा धन नष्ट हो जाएगा।” यह कहकर साधु महाराज रूपी बृहस्पतिदेव अन्तर्धान हो गए।

रानी ने साधु के कहे अनुसार सात बृहस्पतिवार तक वैसा ही करने का विचार किया। साधु

के बताए अनुसार कार्य करते हुए केवल तीन बृहस्पतिवार ही बीते थे कि उसकी समस्त धन-सम्पत्ति नष्ट हो गई। भोजन के लिए दोनों समय परिवार तरसने लगा तथा सांसारिक भोगों से दुखी रहने लगा।

तब राजा रानी से बोला, “हे रानी! तुम यहाँ पर रहो, मैं दूसरे देश को जाता हूँ। यहाँ पर मुझे सभी मनुष्य जानते हैं, इसलिए मैं यहाँ कोई काम नहीं कर सकता। परदेश में कोई काम-धन्धा कर लूँगा। शायद हमारे भाग्य बदल जाएँ।” ऐसा कहकर राजा परदेश चला गया। वह वहाँ जंगल से लकड़ी काटकर लाता और शहर में बेचता। इस तरह वह अपना जीवन व्यतीत करने लगा।

Brihaspati Puja

ॐ बृं बृहस्पतये नमः ✦ ॐ बृं बृहस्पतये नमः ✦ ॐ बृं बृहस्पतये नमः ✦ ॐ बृं बृहस्पतये नमः ✦ ॐ बृं बृहस्पतये नमः ✦ ॐ बृं बृहस्पतये नमः

कथा: भाग दो

रानी और दासी का बृहस्पतिवार व्रत

बहन से मिली व्रत की विधि

इधर राजा के बिना रानी और दासियाँ दुखी रहने लगीं। किसी दिन एक समय भोजन मिलता और किसी दिन जल पीकर ही रह जातीं। एक बार रानी और दासियों को सात दिन बिना भोजन के व्यतीत करने पड़े, तो रानी ने अपनी दासी से कहा, “हे दासी! यहाँ पास के ही नगर में मेरी बहन रहती है। वह बड़ी धनवान है। तू उसके पास जा और वहाँ से पाँच सेर बेझर माँगकर ले आ, जिससे कुछ समय के लिए गुजारा हो जाएगा।”

दासी रानी की बहन के पास गई। रानी की बहन उस समय पूजा कर रही थी। बृहस्पतिवार का दिन था। दासी ने रानी की बहन से कहा, “हे रानी! मुझे आपकी बहन ने भेजा है। मुझे पाँच सेर बेझर दे दो।” दासी ने यह बात अनेक बार कही, परन्तु रानी की बहन ने कोई उत्तर नहीं दिया, क्योंकि वह उस समय बृहस्पतिवार की कथा सुन रही थी। जब दासी को कोई उत्तर नहीं मिला तो वह बहुत दुखी हुई। उसे क्रोध भी आया। वह लौटकर रानी से बोली, “हे रानी! आपकी बहन बहुत ही घमंडी है। वह छोटे लोगों से बात भी नहीं करती। मैंने उससे कहा तो उसने कोई उत्तर नहीं दिया, इसलिए मैं वापस चली आई।”

रानी बोली, “हे दासी! उसका कोई दोष नहीं है। जब बुरे दिन आते हैं तब कोई सहारा नहीं देता। अच्छे-बुरे का पता विपत्ति में ही लगता है। जो ईश्वर की इच्छा होगी, वही होगा। यह सब हमारे भाग्य का दोष है।”

उधर रानी की बहन ने सोचा कि मेरी बहन की दासी आई थी, परन्तु मैं उससे नहीं बोली, इससे वह बहुत दुखी हुई होगी। अतः कथा सुनकर और विष्णु भगवान का पूजन समाप्त कर वह अपनी बहन के घर आई और कहने लगी, “हे बहन! मैं बृहस्पतिवार का व्रत कर रही थी। तुम्हारी दासी हमारे घर गई थी, परन्तु जब तक कथा होती है तब तक हम लोग न उठते हैं और न बोलते हैं, इसलिए मैं नहीं बोली। कहो, दासी क्यों गई थी?”

रानी बोली, “बहन! हमारे घर में अनाज नहीं था। वैसे तुमसे कोई बात छिपी नहीं है। इस कारण मैंने दासी को तुम्हारे पास पाँच सेर बेझर लेने के लिए भेजा था।”

रानी की बहन बोली, “बहन, देखो! बृहस्पति भगवान सबकी मनोकामना पूर्ण करते हैं। देखो, शायद तुम्हारे घर में ही अनाज रखा हो।” यह सुनकर दासी घर के अन्दर गई तो वहाँ उसे बेझर से भरा एक घड़ा मिल गया। उसे बड़ी हैरानी हुई, क्योंकि उसने एक-एक बर्तन देख लिया था। उसने बाहर आकर रानी को बताया और कहने लगी, “हे रानी! देखो, जब हमको अन्न नहीं मिलता तो वैसे भी हम रोज ही व्रत करते हैं। अगर इनसे इस व्रत की विधि

और कथा पूछ ली जाए तो हम भी इसे कर लिया करेंगे।"

दासी के कहने पर रानी ने अपनी बहन से बृहस्पतिवार व्रत के बारे में पूछा। उसकी बहन ने बताया, "हे रानी! बृहस्पतिवार को सूर्योदय से पूर्व उठकर स्नान करके बृहस्पतिवार का व्रत करना चाहिए, लेकिन उस दिन सिर नहीं धोना चाहिए। बृहस्पतिवार के व्रत में केले के वृक्ष की जड़ में चने की दाल और मुनक्का से विष्णु भगवान का पूजन करें तथा दीपक जलाएँ। उस दिन एक ही समय भोजन करें। भोजन में पीले खाद्य पदार्थ लें तथा कथा सुनें। इस प्रकार करने से गुरु भगवान प्रसन्न होते हैं और अन्न, पुत्र तथा धन देते हैं।" इस तरह व्रत और पूजन की विधि बताकर रानी की बहन अपने घर लौट गई।

रानी और दासी दोनों ने निश्चय किया कि वे बृहस्पति देव भगवान का पूजन अवश्य करेंगी। सात दिन बाद जब बृहस्पतिवार आया तो उन्होंने व्रत रखा। घुड़साल में जाकर वे चना और गुड़ बीन लाईं तथा उसकी दाल से केले की जड़ में विष्णु भगवान का पूजन किया। अब भोजन कहाँ से आए? दोनों बड़ी दुखी हुईं, परन्तु उन्होंने व्रत किया था, इस कारण बृहस्पति देव भगवान प्रसन्न थे। वे एक साधारण व्यक्ति के रूप में दो थालों में सुन्दर पीला भोजन लेकर आए और दासी को देकर बोले, "हे दासी! यह भोजन तुम्हारे और रानी के लिए है, तुम दोनों करना।"

दासी भोजन पाकर बड़ी प्रसन्न हुई और रानी से बोली, "रानी जी, भोजन कर लो।" रानी को भोजन आने के बारे में कुछ पता नहीं था, इसलिए वह दासी से बोली, "जा, तू ही भोजन कर, क्योंकि तू हमारी व्यर्थ में हँसी उड़ाती है।" दासी बोली, "एक व्यक्ति अभी भोजन दे गया है।" रानी कहने लगी, "वह भोजन तेरे ही लिए दे गया है, तू ही भोजन कर।" दासी ने कहा, "वह व्यक्ति हम दोनों के लिए दो थालों में भोजन दे गया है, इसलिए मैं और आप दोनों साथ-साथ भोजन करेंगी।" फिर दोनों ने गुरु भगवान को नमस्कार कर भोजन प्रारम्भ किया।

उसके बाद से वे प्रत्येक बृहस्पतिवार को गुरु भगवान का व्रत और पूजन करने लगीं। बृहस्पति भगवान की कृपा से उनके पास फिर से धन हो गया, परन्तु रानी फिर पहले की तरह आलस्य करने लगी। तब दासी बोली, "देखो रानी! तुम पहले भी इसी प्रकार आलस्य करती थीं, तुम्हें धन के रखने में कष्ट होता था, इस कारण सारा धन नष्ट हो गया। अब गुरु भगवान की कृपा से धन मिला है तो फिर तुम्हें आलस्य होता है? बड़ी मुसीबतों के बाद हमने यह धन पाया है, इसलिए हमें दान-पुण्य करना चाहिए। तुम भूखे मनुष्यों को भोजन कराओ, प्याऊ लगवाओ, ब्राह्मणों को दान दो, कुआँ-तालाब-बावड़ी आदि का निर्माण करवाओ, मंदिर-पाठशाला बनवाकर दान दो, कुँवारी कन्याओं का विवाह करवाओ और धन को शुभ कार्यों में खर्च करो, जिससे तुम्हारे कुल का यश बढ़े, स्वर्ग प्राप्त हो और पितर प्रसन्न हों।" दासी की बात मानकर रानी ने इसी प्रकार के कर्म करने प्रारम्भ किए, जिससे उसका यश चारों ओर फैलने लगा।

कथा: भाग तीन

लकड़हारा बने राजा पर कृपा

जंगल में साधु रूपी बृहस्पति देव

एक दिन रानी और दासी आपस में विचार करने लगीं कि न जाने राजा किस दशा में होंगे, उनकी कोई खोज-खबर भी नहीं है। उन्होंने श्रद्धापूर्वक गुरु (बृहस्पति) भगवान से प्रार्थना की कि राजा जहाँ कहीं भी हों, शीघ्र वापस आ जाएँ।

उधर राजा परदेश में बहुत दुखी रहने लगा। वह प्रतिदिन जंगल से लकड़ी बीनकर लाता और उसे शहर में बेचकर अपने दुखी जीवन को बड़ी कठिनाई से व्यतीत करता। एक दिन अपनी पुरानी बातों को याद करके वह रोने लगा और उदास हो गया।

उसी समय बृहस्पतिदेव साधु के वेष में राजा के पास आकर बोले, “हे लकड़हारे! तुम इस सुनसान जंगल में किस चिन्ता में बैठे हो? मुझे बतलाओ।” यह सुनकर राजा के नेत्रों में जल भर आया। साधु की वंदना कर राजा ने अपनी संपूर्ण कहानी सुना दी। महात्मा दयालु होते हैं। वे राजा से बोले, “हे राजा! तुम्हारी पत्नी ने बृहस्पतिदेव के प्रति अपराध किया था, जिसके कारण तुम्हारी यह दशा हुई। अब तुम चिन्ता मत करो, भगवान तुम्हें पहले से अधिक धन देंगे। देखो, तुम्हारी पत्नी ने बृहस्पतिवार का व्रत प्रारम्भ कर दिया है। अब तुम भी बृहस्पतिवार का व्रत करके चने की दाल व गुड़ जल के लोटे में डालकर केले का पूजन करो। फिर कथा कहो या सुनो। भगवान तुम्हारी सब कामनाओं को पूर्ण करेंगे।”

साधु की बात सुनकर राजा बोला, “हे प्रभो! लकड़ी बेचकर तो इतना पैसा भी नहीं मिलता, जिससे भोजन के उपरान्त कुछ बचा सकूँ। मैंने रात्रि में स्वप्न में अपनी रानी को व्याकुल देखा है। मेरे पास कोई साधन नहीं, जिससे उसका समाचार जान सकूँ। फिर मैं कौन-सी कहानी कहूँ, यह भी मुझको मालूम नहीं है।”

साधु ने कहा, “हे राजा! मन में बृहस्पति भगवान के पूजन और व्रत का निश्चय करो। वे स्वयं तुम्हारे लिए कोई राह बना देंगे। बृहस्पतिवार के दिन तुम रोज की तरह लकड़ियाँ लेकर शहर में जाना। तुम्हें रोज से दुगुना धन मिलेगा, जिससे तुम भली-भाँति भोजन कर लोगे तथा बृहस्पतिदेव की पूजा का सामान भी आ जाएगा। तुमने बृहस्पतिवार की जो कहानी पूछी है, वह इस प्रकार है।”

कथा: भाग चार

ब्राह्मण की कन्या की कथा

साधु द्वारा सुनाई गई बृहस्पतिवार व्रत कथा

प्राचीन काल में एक ब्राह्मण था। वह बहुत ही निर्धन था। उसके कोई भी सन्तान नहीं थी। उसकी स्त्री बहुत ही मलिनता के साथ रहती थी। वह न तो स्नान करती और न ही किसी देवता का पूजन करती। इस कारण ब्राह्मण देवता बहुत दुखी रहते थे। बेचारे उसे बहुत कुछ कहते थे, किन्तु उसका कोई परिणाम नहीं निकला।

भगवान की कृपा से ब्राह्मण के घर में एक कन्या का जन्म हुआ। कन्या समय के साथ बड़ी होने लगी। वह प्रातःकाल ही स्नान करके भगवान विष्णु का जप करती थी। कन्या ने बृहस्पतिवार का व्रत भी नियमपूर्वक करना प्रारम्भ कर दिया। पूजा-पाठ समाप्त होने पर जब वह पाठशाला जाती तो अपनी मुट्ठी में जौ भरकर ले जाती और पाठशाला के मार्ग में डालती जाती। लौटते समय वही जौ स्वर्ण के हो जाते तो वह उनको बीनकर घर ले आती। एक दिन वह कन्या सूप में उन सोने के जौ को फटककर साफ कर रही थी कि तभी उसकी माँ ने देख लिया और कहा, “हे बेटी! सोने के जौ को फटकने के लिए तो सोने का सूप भी होना चाहिए।”

दूसरे दिन बृहस्पतिवार था। कन्या ने व्रत रखा और बृहस्पति देव से प्रार्थना की, “हे बृहस्पतिदेव! मुझे सोने का सूप दे दो।” बृहस्पतिदेव ने उसकी प्रार्थना स्वीकार कर ली। फिर रोज की तरह वह कन्या जौ फैलाती हुई पाठशाला चली गई। पाठशाला से लौटकर जब वह नित्य की भाँति जौ बीन रही थी तो बृहस्पतिदेव की कृपा से उसे सोने का सूप मार्ग में पड़ा मिला। उस सोने के सूप को वह घर ले आई और उससे जौ साफ करने लगी, परन्तु उसकी माँ का वही ढंग रहा।

एक दिन जब कन्या सोने के सूप में जौ साफ कर रही थी, उसी समय उस नगर का राजकुमार उसके घर के पास से निकला। कन्या के रंग-रूप को देखकर वह उस पर मोहित हो गया। जब वह अपने राजमहल में आया तो बहुत उदास हो गया और बिना भोजन किए ही लेट गया। राजा को जब राजकुमार द्वारा अन्न-जल त्यागने का समाचार ज्ञात हुआ तो वह अपने मंत्रियों के साथ राजकुमार के पास गया और पूछा, “हे पुत्र! तुम्हें किस बात का दुःख है और तुमने भोजन क्यों त्याग दिया है?”

राजकुमार बोला, “हे पिताश्री! मुझे किसी बात का दुःख नहीं है, परन्तु मैं उस लड़की से विवाह करना चाहता हूँ जो सोने के सूप में सोने के जौ साफ कर रही थी।” राजा ने कहा, “हे पुत्र! तुम उस कन्या का पता बताओ, मैं निश्चित रूप से तुम्हारा विवाह उसी कन्या से करवा दूँगा।” राजकुमार ने राजा को उस लड़की के घर का पता बता दिया। मंत्री उस लड़की

के घर गया और ब्राह्मण के समक्ष राजा की ओर से निवेदन किया। कुछ ही दिन बाद ब्राह्मण की कन्या का विवाह राजकुमार के साथ सम्पन्न हो गया।

कन्या के घर से जाते ही ब्राह्मण के घर में पहले की भाँति गरीबी का निवास हो गया। अब भोजन के लिए अन्न भी बड़ी मुश्किल से मिलता था। एक दिन दुखी होकर ब्राह्मण अपनी पुत्री से मिलने गए। बेटी ने पिता की अवस्था देखी और अपनी माँ का हाल पूछा। ब्राह्मण ने सारा हाल कह सुनाया। कन्या ने बहुत-सा धन देकर अपने पिता को विदा कर दिया, लेकिन कुछ दिन बाद फिर वही हाल हो गया। ब्राह्मण फिर अपनी कन्या के यहाँ गए और सारा हाल कहा। पुत्री बोली, “हे पिताजी! आप माताजी को यहाँ ले आइए। मैं उन्हें वह विधि बता दूँगी, जिससे आपकी सारी गरीबी दूर हो जाएगी।”

ब्राह्मण देवता अपनी स्त्री को साथ लेकर अपनी पुत्री के पास राजमहल पहुँचे तो पुत्री अपनी माँ को समझाने लगी, “हे माँ! तुम प्रातःकाल स्नानादि करके भगवान विष्णु की पूजा करो तो घर की सारी दरिद्रता और कष्ट दूर हो जाएँगे।” परन्तु उसकी माँ ने उसकी एक भी बात नहीं मानी। वह पहले की तरह ही प्रातःकाल उठकर अपनी पुत्री की बची हुई जूठन खा लेती थी।

एक दिन उसकी पुत्री को बहुत गुस्सा आया और उसने अपनी माँ को एक कोठरी में बंद कर दिया। प्रातःकाल माँ को कोठरी से बाहर निकालकर उसने स्नानादि कराके पूजा-पाठ करवाया तो उसकी माँ की बुद्धि ठीक हो गई। इसके बाद उसकी माँ भी नियम से नित्य पूजा-पाठ करने लगी और प्रत्येक बृहस्पतिवार को व्रत करने लगी। इस व्रत के प्रभाव से मृत्यु के बाद वह स्वर्ग को गई। वह ब्राह्मण भी इस लोक का सुख भोगकर स्वर्ग को प्राप्त हुआ। इस तरह कहानी कहकर साधु बने बृहस्पति देव वहाँ से अन्तर्धान हो गए।

Brihaspati Puja

ॐ बृं बृहस्पतये नमः ✦ ॐ बृं बृहस्पतये नमः ✦ ॐ बृं बृहस्पतये नमः ✦ ॐ बृं बृहस्पतये नमः ✦ ॐ बृं बृहस्पतये नमः ✦ ॐ बृं बृहस्पतये नमः

कथा: भाग पाँच

व्रत भूलने का फल और राजा की वापसी

हार की चोरी और बृहस्पति देव की कृपा

धीरे-धीरे समय व्यतीत होने पर फिर बृहस्पतिवार का दिन आया। राजा जंगल से लकड़ी काटकर शहर में बेचने गया। उसे उस दिन और दिनों से अधिक धन मिला। लकड़हारा बने राजा ने चना, गुड़ आदि लाकर बृहस्पतिवार का व्रत किया। उस दिन से उसके सभी क्लेश दूर हुए। परन्तु जब अगला बृहस्पतिवार आया तो लकड़हारा बना राजा व्रत करना भूल गया। इस कारण बृहस्पति भगवान नाराज हो गए।

उस दिन उस नगर के राजा ने विशाल यज्ञ का आयोजन किया था और अपने समस्त राज्य में घोषणा करवा दी थी कि सभी लोग राजमहल में भोजन करने आएँ। कोई अपने घर में चूल्हा न जलाए। जो इस आज्ञा को नहीं मानेगा, उसे फाँसी दे दी जाएगी।

राजा की आज्ञानुसार राज्य के सभी वासी राजा के भोज में सम्मिलित हुए, लेकिन लकड़हारा कुछ देर से पहुँचा, इसलिए राजा उसको अपने साथ महल में ले गए। जब राजा लकड़हारे को भोजन करा रहे थे, तब रानी की दृष्टि उस खूँटी पर पड़ी जिस पर उसका हार लटका हुआ था। उसे हार खूँटी पर दिखाई नहीं दिया। रानी को निश्चय हो गया कि मेरा हार इस लकड़हारे ने चुरा लिया है। उसी समय सैनिक बुलवाकर लकड़हारे को जेल में डलवा दिया गया।

लकड़हारा जेल में विचार करने लगा कि न जाने किस पूर्वजन्म के कर्म से मुझे यह दुख प्राप्त हुआ है, और वह जंगल में मिले उस साधु को याद करने लगा। उसी समय बृहस्पतिदेव साधु के रूप में प्रकट हो गए और कहने लगे, “अरे मूर्ख! तूने बृहस्पति देव का व्रत और पूजा नहीं की और सुख में उन्हें भूल गया, इसी कारण तुझे यह दुख प्राप्त हुआ है। अब चिन्ता मत कर। बृहस्पतिवार के दिन जेलखाने के दरवाजे पर तुझे चार पैसे पड़े मिलेंगे। उनसे तू बृहस्पतिवार की पूजा करना, तो तेरे सभी कष्ट दूर हो जाएँगे।”

अगले बृहस्पतिवार उसे जेल के द्वार पर चार पैसे मिले। लकड़हारा बने राजा ने पूजा का सामान मँगवाकर कथा कही और प्रसाद बाँटा। उसी रात्रि में बृहस्पतिदेव ने उस नगर के राजा के स्वप्न में आकर कहा, “हे राजा! तूने जिसे जेल में बंद किया है, उसे कल छोड़ देना, वह निर्दोष है।” राजा प्रातःकाल उठा तो उसने खूँटी पर हार टँगा देखा। उसने लकड़हारे को बुलाकर उससे क्षमा माँगी और उसे राजा के योग्य सुन्दर वस्त्र-आभूषण भेंट कर विदा किया।

साधु की आज्ञानुसार राजा अपने नगर की ओर चल दिया। नगर के निकट पहुँचने पर उसे बड़ा ही आश्चर्य हुआ। नगर में पहले से अधिक बाग, तालाब, कुएँ और बहुत-सी धर्मशालाएँ,

मंदिर आदि बने हुए थे। राजा ने नगर के एक व्यक्ति से पूछा, "यह किसका बाग और धर्मशाला है?" तब उस व्यक्ति ने बताया कि यह सब इस राज्य की रानी और दासी ने बनवाए हैं। राजा को आश्चर्य हुआ और गुस्सा भी आया कि उसकी अनुपस्थिति में रानी के पास धन कहाँ से आया होगा।

जब रानी ने यह खबर सुनी कि राजा आ रहे हैं, तो उसने अपनी दासी से कहा, "हे दासी! देख, राजा हमको कितनी बुरी हालत में छोड़ गए थे। कहीं वे हमारी बदली हुई हालत देखकर लौट न जाएँ, इसलिए तू दरवाजे पर खड़ी हो जा।" रानी की आज्ञानुसार दासी दरवाजे पर खड़ी हो गई और जब राजा आए तो उन्हें अपने साथ महल में लिवा लाई। तब राजा ने क्रोध करके अपनी तलवार निकाली और पूछने लगे, "बताओ, यह धन तुम्हें कैसे प्राप्त हुआ?" तब रानी ने सारी कथा कह सुनाई।

Brihaspati Puja

कथा: भाग छह

कथा की महिमा

मुर्दा जी उठा, किसान के बैल उठे, संतान का सुख

राजा ने निश्चय किया कि मैं रोज व्रत किया करूँगा और दिन में तीन बार कथा कहा करूँगा। अब हर समय राजा के दुपट्टे में चने की दाल बँधी रहती और वह दिन में तीन बार कथा कहता।

एक दिन राजा ने विचार किया कि चलो, अपनी बहन के यहाँ हो आऊँ। ऐसा निश्चय कर राजा घोड़े पर सवार होकर अपनी बहन के यहाँ चल दिया। मार्ग में उसने देखा कि कुछ लोग एक मुर्दे को लिए जा रहे हैं। उन्हें रोककर राजा कहने लगा, “अरे भाइयो! मेरी बृहस्पतिवार की कथा सुन लो।” वे लोग बोले, “लो, हमारा तो आदमी मर गया है, इसको अपनी कथा की पड़ी है।” परन्तु कुछ आदमी बोले, “अच्छा कहो, हम तुम्हारी कथा भी सुनेंगे।” राजा ने दाल निकाली और कथा कहनी शुरू कर दी। जब कथा आधी हुई तो मुर्दा हिलने लगा और जब कथा समाप्त हुई तो राम-राम करता हुआ वह मुर्दा खड़ा हो गया।

राजा आगे बढ़ा। चलते-चलते शाम हो गई। आगे मार्ग में उसे एक किसान खेत में हल चलाता मिला। राजा ने उससे कथा सुनने का आग्रह किया, लेकिन वह नहीं माना। राजा आगे चल पड़ा। राजा के हटते ही बैल पछाड़ खाकर गिर गए तथा किसान के पेट में बहुत जोर से दर्द होने लगा। उसी समय किसान की माँ रोटी लेकर आई। उसने यह देखा तो अपने पुत्र से सब हाल पूछा। बेटे ने सारा हाल बता दिया। बुढ़िया दौड़ी-दौड़ी उस घुड़सवार के पास पहुँची और उससे बोली, “मैं तेरी कथा सुनूँगी, तू अपनी कथा मेरे खेत पर ही चलकर कहना।” राजा ने लौटकर बुढ़िया के खेत पर जाकर कथा कही, जिसके सुनते ही बैल खड़े हो गए तथा किसान के पेट का दर्द भी बंद हो गया।

राजा अपनी बहन के घर पहुँच गया। बहन ने भाई की खूब मेहमानी की। दूसरे दिन प्रातःकाल राजा जागा तो उसने देखा कि सब लोग भोजन कर रहे हैं। राजा ने अपनी बहन से पूछा, “क्या ऐसा कोई मनुष्य है जिसने भोजन नहीं किया हो, जो मेरी बृहस्पतिवार की कथा सुन ले?” बहन बोली, “हे भैया! यह देश ऐसा ही है। यहाँ लोग पहले भोजन करते हैं, बाद में कोई अन्य काम करते हैं।” फिर वह एक कुम्हार के घर गई, जिसका लड़का बीमार था। उसे मालूम हुआ कि उसके यहाँ तीन दिन से किसी ने भोजन नहीं किया है। बहन ने कुम्हार से अपने भाई की कथा सुनने के लिए कहा। वह तैयार हो गया। राजा ने जाकर बृहस्पतिवार की कथा कही, जिसको सुनकर उसका लड़का ठीक हो गया। अब तो पूरे राज्य में राजा की प्रशंसा होने लगी।

एक दिन राजा ने अपनी बहन से कहा, “हे बहन! मैं अब अपने घर जाऊँगा, तुम भी तैयार

Brihaspati Puja

हो जाओ।" राजा की बहन ने अपनी सास से अपने भाई के साथ जाने की आज्ञा माँगी। सास बोली, "हाँ, चली जा, मगर अपने लड़कों को मत ले जाना, क्योंकि तेरे भाई के कोई सन्तान नहीं है।" बहन ने अपने भाई से कहा, "हे भैया! मैं तो चलूँगी, मगर कोई बालक नहीं जाएगा।" तब बहन को भी छोड़कर दुखी मन से राजा अपने नगर लौट आया।

राजा ने अपनी रानी को सारी बात बताई और बिना भोजन किए शय्या पर लेट गया। रानी बोली, "हे प्रभो! बृहस्पतिदेव ने हमें सब कुछ दिया है, वे हमें सन्तान भी अवश्य देंगे।" उसी रात बृहस्पतिदेव ने राजा से स्वप्न में कहा, "हे राजा! उठ, सभी सोच त्याग दे। तेरी रानी गर्भवती है।" राजा को यह जानकर बड़ी खुशी हुई। नवें महीने रानी के गर्भ से एक सुन्दर पुत्र पैदा हुआ।

तब राजा बोला, "हे रानी! स्त्री बिना भोजन के रह सकती है, परन्तु बिना कहे नहीं रह सकती। जब मेरी बहन आए तो तुम उससे कुछ मत कहना।" रानी ने हाँ कर दी। जब राजा की बहन ने यह शुभ समाचार सुना तो वह बहुत खुश हुई और बधाई लेकर अपने भाई के यहाँ आई। रानी ने उसे उलाहना दिया, "जब भाई तुम्हें अपने साथ ला रहे थे, तब तुम टाल गईं और उनके साथ न आईं, और आज अपने आप ही भागी-भागी बिना बुलाए आ गईं।" तब राजा की बहन बोली, "मैं इस प्रकार न कहती तो तुम्हारे घर औलाद कैसे होती?"

॥ व्रत का फल ॥

बृहस्पतिदेव सभी कामनाएँ पूर्ण करते हैं। जो सद्भावनापूर्वक बृहस्पतिवार का व्रत करता है, कथा पढ़ता है अथवा सुनता है और दूसरों को सुनाता है, बृहस्पतिदेव उसकी सभी मनोकामनाएँ पूर्ण करते हैं और उसकी सदैव रक्षा करते हैं। जो संसार में सद्भावना से गुरुदेव का पूजन एवं व्रत सच्चे हृदय से करते हैं, उनकी सभी मनोकामनाएँ वैसे ही पूर्ण होती हैं, जैसे सच्ची भावना से कथा का गुणगान करने पर बृहस्पतिदेव ने राजा और रानी की सभी इच्छाएँ पूर्ण कीं। अनजाने में भी बृहस्पतिदेव की उपेक्षा न करें, क्योंकि ऐसा करने से सुख-शांति नष्ट हो जाती है। इसलिए सबको कथा सुनने के बाद प्रसाद लेकर जाना चाहिए और हृदय से उनका मनन करते हुए जयकारा बोलना चाहिए।

Brihaspati Puja

ॐ बृं बृहस्पतये नमः ✦ ॐ बृं बृहस्पतये नमः ✦ ॐ बृं बृहस्पतये नमः ✦ ॐ बृं बृहस्पतये नमः ✦ ॐ बृं बृहस्पतये नमः ✦ ॐ बृं बृहस्पतये नमः

आरती

ॐ जय बृहस्पति देवा

ॐ जय बृहस्पति देवा, जय बृहस्पति देवा।
छिन-छिन भोग लगाऊं, कदली फल मेवा।।
ॐ जय बृहस्पति देवा।।

तुम पूर्ण परमात्मा, तुम अंतर्यामी।
जगतपिता जगदीश्वर, तुम सबके स्वामी।।
ॐ जय बृहस्पति देवा।।

चरणामृत निज निर्मल, सब पातक हर्ता।
सकल मनोरथ दायक, कृपा करो भर्ता।।
ॐ जय बृहस्पति देवा।।

तन, मन, धन अर्पण कर, जो जन शरण पड़े।
प्रभु प्रकट तब होकर, आकर द्वार खड़े।।
ॐ जय बृहस्पति देवा।।

दीनदयाल दयानिधि, भक्तन हितकारी।
पाप दोष सब हर्ता, भव बंधन हारी।।
ॐ जय बृहस्पति देवा।।

सकल मनोरथ दायक, सब संशय हारो।
विषय विकार मिटाओ, संतन सुखकारी।।
ॐ जय बृहस्पति देवा।।

जो कोई आरती तेरी प्रेम सहित गावे।
जेठानन्द आनन्दकर, सो निश्चय पावे।।
ॐ जय बृहस्पति देवा।।

भगवान विष्णु की आरती

ॐ जय जगदीश हरे

ॐ जय जगदीश हरे, स्वामी जय जगदीश हरे।
भक्त जनों के संकट, दास जनों के संकट, क्षण में दूर करे॥
ॐ जय जगदीश हरे॥

जो ध्यावे फल पावे, दुःख बिनसे मन का, स्वामी दुःख बिनसे मन का।
सुख सम्पति घर आवे, कष्ट मिटे तन का॥
ॐ जय जगदीश हरे॥

मात पिता तुम मेरे, शरण गहूँ मैं किसकी, स्वामी शरण गहूँ मैं किसकी।
तुम बिन और न दूजा, आस करूँ मैं जिसकी॥
ॐ जय जगदीश हरे॥

तुम पूरण परमात्मा, तुम अन्तर्यामी, स्वामी तुम अन्तर्यामी।
पारब्रह्म परमेश्वर, तुम सब के स्वामी॥
ॐ जय जगदीश हरे॥

तुम करुणा के सागर, तुम पालनकर्ता, स्वामी तुम पालनकर्ता।
मैं मूरख फलकामी, मैं सेवक तुम स्वामी, कृपा करो भर्ता॥
ॐ जय जगदीश हरे॥

तुम हो एक अगोचर, सबके प्राणपति, स्वामी सबके प्राणपति।
किस विधि मिलूँ दयामय, तुमको मैं कुमति॥
ॐ जय जगदीश हरे॥

दीन-बन्धु दुःख-हर्ता, ठाकुर तुम मेरे, स्वामी रक्षक तुम मेरे।
अपने हाथ उठाओ, अपने शरण लगाओ, द्वार पड़ा तेरे॥
ॐ जय जगदीश हरे॥

विषय-विकार मिटाओ, पाप हरो देवा, स्वामी पाप हरो देवा।
श्रद्धा भक्ति बढ़ाओ, सन्तन की सेवा॥
ॐ जय जगदीश हरे॥

Brihaspati Puja

आरती विधि

आरती कब और कैसे करें

1. आरती की थाली में घी से भरा दीपक और रुई की बत्ती रखें। कई परिवार थाली में कपूर का एक टुकड़ा भी रखते हैं।
2. छोटी घंटी, थोड़ा जल, पीले फूल और प्रसाद (भीगी चने की दाल, गुड़, केले या पीली मिठाई) पूजा स्थान के पास तैयार रखें।
3. घी का दीपक और कपूर जलाएं। बाएं हाथ से घंटी बजाएं और दाएं हाथ में थाली पकड़ें।
4. सब लोग "ॐ जय बृहस्पति देवा" गाएं और भगवान विष्णु या बृहस्पति देव की प्रतिमा के सामने थाली को धीरे-धीरे दक्षिणावर्त (घड़ी की दिशा में) घुमाएं।
5. अंतिम पद के बाद थाली के चारों ओर थोड़ा जल छिड़कें, फिर सभी को आरती दें। भक्त दोनों हथेलियां लौ के ऊपर से घुमाकर आंखों और सिर से लगाते हैं।
6. अंत में प्रणाम करें, पूजा में हुई किसी भूल के लिए क्षमा मांगें और प्रसाद बांटें।

भावार्थ

आरती का सरल अर्थ

आरती की शुरुआत बृहस्पति देव की जय-जयकार से होती है, जिसमें भक्त बार-बार उन्हें केले और मेवे का भोग लगाते हैं। उन्हें पूर्ण परमात्मा, सबके मन की बात जानने वाले अंतर्यामी, जगत के पिता और सबके स्वामी कहा गया है।

बीच के पदों में कहा गया है कि उनका चरणामृत निर्मल है और सभी पापों को हर लेता है, और वे सभी शुभ मनोकामनाएं पूरी करते हैं। जो व्यक्ति तन, मन और धन अर्पित करके उनकी शरण में आता है, प्रभु स्वयं प्रकट होकर उसके द्वार पर आ खड़े होते हैं। उन्हें दीनदयाल, दया के सागर, भक्तों का हित करने वाले और संसार के बंधन से मुक्त करने वाले कहा गया है।

फिर आरती में उनसे सभी संशय और मन के विकार मिटाने की प्रार्थना की जाती है। अंतिम पद में कहा गया है कि जो कोई प्रेम से यह आरती गाता है, उसे निश्चय ही परम आनंद मिलता है।

Brihaspati Puja

ॐ बृं बृहस्पतये नमः ✦ ॐ बृं बृहस्पतये नमः ✦ ॐ बृं बृहस्पतये नमः ✦ ॐ बृं बृहस्पतये नमः ✦ ॐ बृं बृहस्पतये नमः ✦ ॐ बृं बृहस्पतये नमः

क्षमा प्रार्थना

समापन प्रार्थना

आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम्।
पूजां चैव न जानामि क्षमस्व परमेश्वर॥
मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं जनार्दन।
यत्पूजितं मया देव परिपूर्णं तदस्तु मे॥

हे बृहस्पति देव! कथा-पाठ, पूजन और आरती में जाने-अनजाने हुई किसी भी भूल को क्षमा करें। हमारे घर में ज्ञान, सुख, शांति और समृद्धि बनाए रखें और सबका कल्याण करें।

बोलो बृहस्पति देव भगवान की जय।

बोलो श्री लक्ष्मीनारायण भगवान की जय।

Brihaspati Puja
VRAT • KATHA • AARTI



निःशुल्क पुस्तिका

बृहस्पति व्रत की उद्यापन विधि, नियम, मंत्र, लाभ, शुभ समय और अंग्रेज़ी में कथा, सब कुछ एक ही जगह पढ़ें।

स्कैन करें या खोलें

brihaspatipuja.com

यह पुस्तिका निःशुल्क है। इसे परिवार और मित्रों के साथ साझा करें।